चौखम्बा संस्कृत सीरीज
१६२
****

कृष्णद्वैपायनमहर्षिव्यासविरचितम्

ब्रह्मपुराणम्

मूल तथा भाषानुवाद

भाषाभाष्यकार
एस. एन. खण्डेलवाल
(श्री नाथ खण्डेलवाल)

उत्तर भागः

चौखम्बा संस्कृत सीरीज आफिस
वाराणसी

विषयानुक्रमणिका

अध्याय	पृष्ठांक
१. पुत्रतीर्थ वर्णन	१
२. यमतीर्थ वर्णन	१८
३. तपःतीर्थ का वर्णन	२५
४. देवतीर्थ वर्णन	३१
५. तपोवन प्रभृति तीर्थ वर्णन	३९
६. इन्द्रतीर्थ वर्णन	४८
७. आपस्तम्ब तीर्थ वर्णन	६३
८. यमतीर्थ वर्णन	६७
९. यक्षिणी संगम का माहात्म्य वर्णन	७४
१०. शुक्लतीर्थ वर्णन	७५
११. चक्रतीर्थ वर्णन	७८
१२. वाणी संगम तीर्थ वर्णन	८०
१३. विष्णुतीर्थ वर्णन	८३
१४. लक्ष्मीतीर्थ का वर्णन	८८
१५. भानु प्रभृति तीन सहस्र तीर्थ वर्णन	९३
१६. खड्गतीर्थ वर्णन	९८
१७. अन्विन्द्रात्रेय तीर्थ वर्णन	१००
१८. कपिला संगम नामक तीर्थ वर्णन	१०६
१९. देवस्थान तीर्थ का वर्णन	१०९
२०. सिद्धतीर्थ वर्णन	१११
२१. परुष्णी संगम तीर्थ वर्णन	११३
२२. मार्कण्डेय तीर्थ का वर्णन	११७
२३. कालञ्जर तीर्थ वर्णन	११८
२४. अप्सरायुग-संगम तीर्थ वर्णन	१२४
२५. कोटितीर्थ वर्णन	१२६
२६. नारसिंह तीर्थ वर्णन	१२९
२७. पैशाचतीर्थ वर्णन	१३१
२८. निम्नभेदतीर्थ वर्णन	१३४
२९. आनन्दतीर्थ वर्णन	१३७
३०. भावतीर्थ का वर्णन	१४२
३१. सहस्रकुण्ड नामक तीर्थ का वर्णन	१४३
३२. कपिलातीर्थ का वर्णन	१४७
३३. शंखह्रदतीर्थ वर्णन	१४८
३४. किष्किन्धातीर्थ वर्णन	१५०
३५. व्यासतीर्थ वर्णन	१५४
३६. वञ्जरासंगमतीर्थ वर्णन	१५८
३७. देवागमतीर्थ का वर्णन	१६४
३८. कुशतर्पणतीर्थ प्रसंग वर्णन	१६७
३९. मन्युतीर्थ वर्णन	१७५
४०. सारस्वततीर्थ का वर्णन	१७८
४१. चिच्चिकतीर्थ का वर्णन	१८४
४२. भद्रतीर्थ वर्णन	१९०
४३. पतत्रितीर्थ का वर्णन	१९५
४४. विप्रतीर्थ वर्णन	१९७
४५. भानुतीर्थ वर्णन	२०१
४६. भिल्लतीर्थ वर्णन	२०५
४७. चक्षुतीर्थ वर्णन	२१०
४८. उर्वशीतीर्थ वर्णन	२२१
४९. सामुद्रतीर्थ वर्णन	२२७
५०. भीमेश्वरतीर्थ का वर्णन	२२९
५१. गंगासागर-संगम वर्णन	२३३
५२. तीर्थों का चतुर्विध्यादि (चार प्रकार का) निरूपण	२३७
५३. अनन्त वासुदेव माहात्म्य का वर्णन	२४७
५४. पुरुषोत्तम क्षेत्र माहात्म्य वर्णन	२५२
५५. कण्डु का चरित्र वर्णन	२५६
५६. मुनिगण द्वारा वादरायण से श्रीकृष्णावतार विषयक प्रश्न करना	२७४
५७. श्रीकृष्ण चरित्र वर्णन	२८१
५८. अवतार के प्रयोजन का वर्णन	२८५
५९. श्रीकृष्णोत्पत्ति कथा निरूपण	२९१
६०. कंस विचार कथन	२९५
६१. श्रीकृष्ण बाल चरित वर्णन	२९६
६२. कालीय दमन का वर्णन	३०२
६३. धेनुवध का आख्यान	३०७
६४. रामकृष्ण कृत अनेक लीला वर्णन	३०९

६५. गोवर्द्धन आख्यान का वर्णन ३१५
६६. अरिष्टवध निरूपण ३२०
६७. केशी वध का वर्णन ३२६
६८. अक्रूर के व्रज जाने का वर्णन ३३०
६९. अक्रूर का वापस लौटना ३३४
७०. कुब्जा के उद्धार का वर्णन ३४२
७१. देवकी-वसुदेव के साथ इन्द्र का संवाद ३५०
७२. जरासन्ध सहित राम-जनार्दन के युद्ध का वर्णन ३५४
७३. कालयवन का उपाख्यान ३५५
७४. गोकुल में बलराम का पुनः आना ३६०
७५. हलधर बलराम की क्रीड़ा का वर्णन ३६२
७६. रुक्मिणी विवाह वर्णन ३६४
७७. प्रद्युम्न के आख्यान का वर्णन ३६६
७८. अनिरुद्ध के विवाह काल में रुक्मीवध वर्णन ३६९
७९. नरक वध वर्णन ३७३
८०. अदिति कृत भगवान् की स्तुति ३७६
८१. इन्द्र तथा कृष्ण के संवाद का वर्णन ३८४
८२. अनिरुद्ध के चरित्र का वर्णन ३८६
८३. बाण के साथ कृष्ण के युद्ध का वर्णन ३८९
८७. पौंड्रक वध का वर्णन ३९४
८५. बलदेव माहात्म्य वर्णन ३९९
८६. द्विविद वानर वध वर्णन ४०३
८७. भगवान् द्वारा भूमिभार हटाने का वर्णन ४०६
८८. कृष्ण द्वारा मनुष्य देह का विसर्जन ४१२
८९. रुक्मिणी आदि का परलोकगमन ४१३
९०. वराहावतार वर्णन ४२३
९१. नरक वर्णन ४३९
९२. दक्षिण मार्ग वर्णन ४५०
९३. नरकगत दुःखों का निवारण तथा धर्माचरण का वर्णन ४६२
९४. धर्म की श्रेष्ठता का वर्णन ४७१
९५. अन्नदान की प्रशंसा का वर्णन ४८१
९६. श्राद्ध विधि वर्णन ४८४
९७. श्राद्ध कल्प वर्णन ४९६
९८. सदाचार वर्णन ५१७
९९. वर्णाश्रम धर्म वर्णन ५३३
१००. संकर जातियों का लक्षण वर्णन ५३९
१०१. मानव को उत्तम गति प्राप्ति का वर्णन ५४६
१०२. उमामहेश्वर संवाद में देवलोक प्राप्ति कारण का वर्णन ५५१
१०३. मुनि तथा महेश्वर संवाद के अन्तर्गत् वासुदेव महिमा का वर्णन ५५७
१०४. मुनि व्यास संवाद के अन्तर्गत् विष्णुपूजा कथन ५६३
१०५. व्यास तथा मुनिगण के संवाद में विष्णु-पूजा का वर्णन ५६८
१०६. व्यास-मुनि संवादान्तर्गत् विष्णुभक्ति साधन वर्णन ५८४
१०७. व्यास तथा मुनिसंवाद के अन्तर्गत् महाप्रलय का वर्णन ५९५
१०८. व्यास-मुनि संवाद प्रसंग में द्वापर युगान्त का वर्णन ६०३
१०९. व्यास तथा मुनियों के संवादक्रम में प्रकृत प्रलय वर्णन ६१२
११०. प्रकृत लय निरूपण ६१६
१११. आत्यन्तिक लय निरूपण ६२१
११२. योगाभ्यास निरूपण ६२८
११३. सांख्ययोग का वर्णन ६३१
११४. ज्ञानियों को मोक्षलाभ का वर्णन ६३८
११५. गुणसृष्टि का वर्णन ६४७
११६. योगविधि का निरूपण ६५४
११७. सांख्यविधि का वर्णन ६६०
११८. वसिष्ठ-करालजनक संवाद के अन्तर्गत् क्षर-अक्षर निरूपण ६७१
११९. वसिष्ठ-करालजनक के संवाद का वर्णन ६७६
१२०. मोक्षधर्म के सम्बन्ध में वसिष्ठ से करालजनक द्वारा प्रश्न ६८१
१२१. विद्या-अविद्या का स्वरूप वर्णन ६८९
१२२. अज का (अजन्मा) भी विक्रिया से नाना होना ६९४
१२३. ब्रह्मपुराण पठन-श्रवण फल ६९९

❖❖❖

॥ श्रीगणेशायनमः॥

॥ॐ नमो भगवते वासुदेवाय॥

श्रीमन्महर्षिवेदव्यासप्रणीतम्

ब्रह्मपुराणम्

उत्तर भागः

अथ चतुर्विंशत्यधिकशततमोऽध्यायः

पुत्रतीर्थ वर्णन

ब्रह्मोवाच

पुत्रतीर्थमिति ख्यातं पुण्यतीर्थं तदुच्यते। सर्वान्कामानवाप्नोति यन्महिम्नः श्रुतेरपि॥१॥
तस्य स्वरूपं वक्ष्यामि शृणु यत्नेन नारद। दितेः पुत्राश्च दनुजाः परिक्षीणा यदाऽभवन्।
अदितेस्तु सुता ज्येष्ठाः सर्वभावेन नारद॥२॥
तदा दितिः पुत्रवियोगदुःखात्संस्पर्धमाना दनुमाजगाम॥३॥

ब्रह्मा कहते हैं—जिसके माहात्म्य को सुनने से सभी कामनायें प्राप्त हो जाती हैं, उस पुण्यतीर्थ के प्रसंग में मैंने नाना तीर्थों का वर्णन किया है। अब उस पुण्य तीर्थ का विवरण कहता हूं। हे नारद! पहले उसके स्वरूप को कहता हूं। यत्नतः श्रवण करो। पूर्वकाल में देवासुर युद्ध में दिति तथा दनु के पुत्र (दैत्य-दानव) पूर्णतः क्षीण हो गये। अदिति के पुत्रों ने सभी प्रकार की प्रधानता प्राप्त किया था। हे नारद! उस समय दिति पुत्र वियोग से पीड़ित होकर अपनी सौत अदिति से ईर्ष्यालु होकर सौत दनु के पास गयीं। वे उनसे कहने लगीं—॥१-३॥

दितिरुवाच

क्षीणाः सुता आवयोरेव भद्रे, किं कुर्महे कर्म लोके गरीयः।
पश्यादितेर्वंशमभिन्नमुत्तमं, सौराज्ययुक्तं यशसा जयश्रिया॥४॥
जितारिमभ्युन्नतकीर्तिधर्मं, मच्चित्तसंहर्षविनाशदक्षम्।
समानभर्तृत्वसमानधर्मे, समानगोत्रेऽपि समानरूपे॥५॥
न जीवयेयं श्रियमुन्नतिं च, जीर्णाऽस्मि दृष्ट्वा त्वदितिप्रसूतान्।
कामप्यवस्थामनुयामि दुःस्थाऽदितेर्विलोक्याथ परां समृद्धिम्।
दावप्रवेशोऽपि सुखाय नूनं, स्वप्नेऽप्यवेक्ष्या न सपत्नलक्ष्मीः॥६॥